ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से सुल्तानपुर

कंचन देवी
शोधार्थी
श्री कुन्द–कुन्द जैन पी०जी० कॉलेज
खतौली, मुजफ्फरनगर

प्रो० नीतू वशिष्ठ
श्री कुन्द – कुन्द जैन पी०जी० कॉलेज
खतौली, मुजफ्फरनगर

सारांशिका

जिला सुलतानपुर प्राचीन कोशल राज्य का अंग था। देवों द्वारा बसाई गई अयोध्या नगरी अथर्ववेद के अनुसार स्वर्ग के समान थी। सुलतानपुर जिले का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली एवं महत्वपूर्ण माना गया इसका कारण था अयोध्या का निकट होना। इतिहास का भूगोल से गहरा सम्बन्ध है ये एक दूसरे के पूरक भी है। प्रत्येक निश्चित भू–भाग का अपना इतिहास होता है। इसी प्रकार सुलतानपुर जनपद का अपना इतिहास है। वर्तमान सुलतानपुर का प्राचीन नाम कुशपुर, कुशावती अथवा कुशाभवनपुर था। इतिहासकारों का मानना है कि इस जनपद के मुख्य नगर को श्रीरामचन्द्र के जेष्ठ पुत्र कुश ने भौगोलिक रूप से गोमती नदी के किनारे बसाया था।

मुख्य बिन्दु : सुलतानपुर, ऐतिहासिक, धार्मिक, श्रद्धालु, मेला, शताब्दी, नदी, पर्यटन स्थल।

प्रस्तावना

''जहाँ तक सुलतानपुर के प्राचीन इतिहास का सम्बन्ध है यह क्षेत्र रामायण काल में पूर्व कोशल राज्य का ही अंग था। कोशल के पूर्व में विदेह अंग व बलशाली राज्य थे। पश्चिम में पांचाल उत्तर में हिमगिरि दक्षिण में स्यान्दिका (सई) नदी सीमा बनाती थी।''

श्रीराम के जेष्ठ पुत्र कुश द्वारा बसाया गया जनपद विभाजन के पश्चात उन्हें दक्षिण कोशल का भू–भाग प्राप्त हुआ जिसकी राजधानी अयोध्या थी। उनके छोटे भाई लव को उत्तर कोशल का राज्य प्राप्त हुआ जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी। जो सरयू नदी के उत्तर में पड़ती थी।

इस जनपद में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक खोज के लिए उत्खनन का कोई विशेष कार्य नही हुआ। किन्तु कई प्राचीन धार्मिक स्थल ऐसे है जिनका ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व है। जो सुलतानपुर के धार्मिक स्थलों में अपना अलग स्थान रखते है। जिला सुलतानपुर की धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में त्योहार पर्व एवं औद्योगिक केन्द्रों का विशिष्ट योगदान है। जनपद सुलतानपुर में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई बौद्ध एवं जैन सभी धर्म निवास करते हैं। यह सत्य है कि जनसंख्या के अनुपात के अनुसार हिन्दुओं की आबादी सबसे ज्यादा है। हिन्दुओं के नवरात्रि, दशहरा, रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी, दीपावली एवं होली प्रमुख पर्व है। मुसलमान इदुल्जुहा, बारफात, सव–ए–रात और मोहर्रम मनाते है। सिख के अनुयायी गुरुनानकदेव, गुरु गोविन्द सिंह के जन्मदिवस पर विविध आयोजन करते हैं। इसी प्रकार सभी धर्म अपने–2 पर्व बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस जनपद में ऐसे पर्वों पर प्रमुख स्थलों पर अपार जनसमुदाय इकट्ठा होता है। दर्शनार्थी आते है आस्था प्रकट कर वापस लौट जाते हैं। इन धार्मिक स्थलों पर विराट मेला भी लगता है। ऐसे प्रमुख धार्मिक स्थल जो निम्नवत हैं–

जनपद सुलतानपुर में ऐसे धार्मिक स्थल अपना अलग ही महत्व रखते हैं। जो इस प्रकार हैं–

धार्मिक स्थल :

1. हनुमान मन्दिर व मकरीकुण्ड (विजयथुआ)

जनपद सुलतानपुर की तहसील कादीपुर मुख्यालय से लगभग 7 कि.मी. की दूरी पर पूरब दिशा में विजयथुआ नामक स्थल है। इस स्थल का पुरातात्विक पौराणिक एवं धार्मिक महत्व है। महावीर का विशाल मन्दिर है। नागपंचमी के बाद पड़ने वाले मंगलवार को प्राचीन काल से ही मेला लगता चला आ रहा है। वैसे प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को श्रद्धालु यहाँ पर दर्शन करने के लिये आते–जाते रहते है। यहाँ मकरीकुण्ड तथा हत्याहरण, पुष्करिणी भी हैं मन्दिर में पुरातात्विक महत्व की वराह अवतार की प्रतिमा भी है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार अयोध्या के वैरागी बाबा रामप्रसाद दास ने करवाया था।

हनुमान मन्दिर (विजयथुआ), सुलतानपुर (उ०प्र०)

जनश्रुति है कि जब राम रावण युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति आघात लगा था तो हनुमान लक्ष्मण की प्राण रक्षा के लिए संजीवनी बूटी लाने के लिए हिमालय जा रहे थे। इसी विजेथुआ स्थल पर रावण के मामा कालनेमि ने वेश बदलकर धोखा देने की नीयत से हनुमान

के मार्ग में अवरोध उत्पन्न किया। परिस्थिति को भांपने के बाद हनुमान ने इसी जगह पर कालनेमि का वध किया था।

जनश्रुति के अनुसार भगवान हनुमान ने मकरीकुण्ड में स्नान भी किया जो विजयथुआ मन्दिर के किनारे पर स्थित है। उसमें स्नान करते समय मकरी ने हनुमान जी से कहा कि कालनेमि सन्त नहीं बल्कि दैत्य है। तब से यह कुण्ड मकरीकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जनश्रुति के अनुसार यहाँ के तालाबों का सुन्दरीकरण जिलापंचायत के पूर्व अध्यक्ष राजकिशोर सिंह द्वारा कराया गया।

2. धोपाप

धोपाप मन्दिर, धोपाप, सुलतानपुर (उ०प्र०)

लम्भुआ से 4–8 कि० मी० उत्तर में गोमती नदी के तट पर धोपाप धाम है। प्रतिवर्ष रामनवमी एवं जेष्ठ शुक्ल दशमी को असंख्य लोग यहाँ स्नान करते है। विष्णुपुराण में गोमती नदी को धुतपापा कहा गया है। लोगों का मानना है कि यहाँ स्नान करने से मुक्ति मिलती है। इस जगह के पास एक लुप बनाने के बाद दक्षिण पूर्व में तेज मोड़ लेता है जो धोपाप घाट के नाम से जाना जाने लगा। जनश्रुति के अनुसार धोपाप में ही श्रीराम ने रावण की हत्या के बाद ब्रह्महत्या को उपसमित (प्रायश्चित) किया। महर्षि वशिष्ठ की सलाह पर गोमती नदी में डुबकी लेकर जब श्रीराम लंका से लौट रहे थे। लोग मानते हैं कि जो दशहरे के दिन इस जगह पर जाते है वह अपने पापों को धो सकते हैं। इसलिए इस स्थान का महात्म्य है। राजा दियरा ने यहाँ के घाट का सुन्दरीकरण कराया सूरी द्वारा निर्मित लखौरी नामक किला था। यहीं पर शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित लखौरी नाम किला था जो अब ध्वस्त है।

''दियरा का भी पौराणिक महत्व है कहा जाता है कि धोपाप में लंका विजय के पश्चात राम ने जब गोमती नदी में स्नान कर ब्रह्म हत्या से मुक्ति पाई तब नदी के उत्तरी छोर पर दीपदान किया। इसलिए उस स्थान को दीपनगर अथवा दियरा कहा गया।''

धोपाप धाम पर पहुँचने के लिए रेल द्वारा सड़क के द्वारा पहुँचा जा सकता है। रेल इनका अपना रेलवे स्टेशन लम्भुआ रेलवे जं. नाम से है जो उत्तर–प्रदेश के सभी प्रमुख शहरों और सुलतानपुर, लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, जयपुर और भोपाल जैसे राज्यों से जुड़ा हुआ है।

3. पाण्डेबाबा

पण्डेबाबा, सुलतानपुर (उ०प्र०)

कादीपुर तहसील क्षेत्र के मोतिगरपुर ब्लाक ग्राम बढ़ौना ढोह में पाण्डेबाबा नाम से विशाल मेला विजयदशमी के दिन शताब्दियों से लगता चला आ रहा है जो दो दिन तक चलता है। जिला मुख्यालय से करीब 32 किमी दूर बलिया लखनऊ रोड पर बाबा के भक्त कई दिनों पहले से यहाँ आकर रहते हैं। और बाबा की महिमा के बारे में आल्हा गायन करते हैं।

बाबा धाम में इतने चावल चढ़ते हैं कि उनके सेवक परिवारों को खाने की कोई कमी नहीं रहती। जनश्रुति के अनुसार करीब 150 साल पहले ब्लॉक मोतिगरपुर के पास धर मंगलपांडे के नाम से अविवाहित तपस्वी थे। दियरा राजवंश परिवार ने रघु जल्लाद से उनकी हत्या करवा दी थी। माना जाता है कि यह विवाद राजपरिवार से एक भूखण्ड को लेकर था। राजपरिवार उस भूखण्ड को धरपरिवार को देना नहीं चाहता था। लेकिन धर पाण्डे उस भूखण्ड को हर हाल में हासिल करना चाहते थे। इसी विवाद के कारण राजपरिवार ने घर पर मंगल पांडे की हत्या करा दी। बताया तो यह भी जाता है कि मौत से पहले मंगल पाण्डे ने राजपरिवार के विरोध में कई महीनों तक खाना–पीना छोड़ दिया था। हत्या कराने वाले राजपरिवार की परेशानियाँ बढ़

गई। फलस्वरूप यहाँ पर पाण्डे बाबा का चौरा स्थापित हुआ। स्थान की महत्ता बढ़ने के साथ ही साथ विराट मेला भी लगने लगा। यहाँ पर चढ़ावा चढ़ाने वाले तथा सेलानियों का व्यापक जमावड़ा होता है। लोग पशुओं के लिए कौड़ी चढ़ाते हैं।

4. सीताकुण्ड घाट

कुश, सीताकुण्ड घाट, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वर्तमान सुलतानपुर नगर की उत्तरी सीमा पर गोमती नदी के किनारे यह घाट स्थित है। चैत्य रामनवमी, कार्तिक पूर्णिमा, माघ अमावस्या, बसन्तपंचमी एवं दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर इस स्थान पर इकट्ठा श्रद्धालु गोमती नदी में डुबकी लगाते लोकश्रुति के अनुसार ये वो स्थल जहाँ श्रीराम ने वनगमन के वक्त सीता एवं लक्ष्मण के साथ रात्रि विश्राम किया था और सीता जी ने स्नान किया था सुलतानपुर का इतिहास, पुस्तक के रचयिता राजेश्वर सुलतानपुर सिंह बताते है कि हर्ष के शासनकाल में जब चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया तो उसमे भी सीताकुण्ड घाट का अवलोकन किया था। उसने अपने डायरी में इसके महत्व का अंकन किया। कुछ सालों पहले श्रीराम के पुत्र कुश की विशालकाय भव्य प्रतिमा यहाँ पर स्थापित की गई थी।

5. पारिजात वृक्ष

सुलतानपुर शहर के गोमती नदी के तट पर उद्योग केन्द्र के परिसर में ये वृक्ष उपस्थित है। यह एक बहुत पुराना वृक्ष है जो अत्यन्त प्राचीन होने के कारण दर्शनीय है। इस जगह पर आने वाले श्रद्धालुओं के इच्छाओं को उनकी प्रार्थना के अनुसार पूरी करता है। यहाँ नियमित रूप से लोग आकर प्रसाद चढ़ाकर पूजा–अर्चना आदि करते हैं। सुलतानपुर जिले में इस पारिजात वृक्ष को देववृक्ष कहा जाता है। धार्मिक मान्यता है कि यह वृक्ष मनोवांक्षित कामनाओं को पूरा करने वाला है। सच्चे मन से इस

परिजात वृक्ष, उद्योग केन्द्र, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वृक्ष के नीचे प्रार्थना करने पर इन्सान के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा ने व्रत अनुष्ठान के दौरान भगवान कृष्ण से पारिजात को धरती घर लाने की जिद की थी। इस पर भगवान कृष्ण और देवराज इन्द्र के बीच संग्राम हुआ और इन्द्र की हार हुई। भगवान श्रीकृष्ण की जीत पर देवमाता ने उन्हें पारिजात भेंट किया था। तब से यह वृक्ष धरती पर है। देववृक्ष पारिजात की खासियत यह है कि इस वृक्ष में फूल तो खिलते है लेकिन फल नहीं होता। इस वृक्ष का न तो बीज होता है और न ही तना लगता है न ही जड़ है। इस बात को लेकर उत्थान विभाग के अधिकारी भी आश्चर्य में हैं। इन सबके अतिरिक्त जनपद सुलतानपुर में बहुत सी मजार, बहुत से पर्यटन स्थल है जो जनपद सुलतानपुर को एक खास पर्यटन स्थल बनाते है। पर्यटन की दृष्टिकोण से यह स्थल पर्यटको को अपनी ओर आकर्षित करते है। यहाँ ठहरने के लिए विश्रामगृह भी बने हुए है। परन्तु बिजेथुआ, धोपाप, पाण्डेबाबा में पर्यटन विश्रामगृह का अभाव खटकता रहता है जबकि शताब्दियों से इन स्थलों पर श्रद्धालु आते–जाते रहते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. हेमन्त राय चौधरी, पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्शिएन्ट इण्डिया, पृ०सं० 77–78।
2. सुल्तानपुर इतिहास की झलक, राजेश्वर सिंह, पृ०सं०–06।